International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 05-08-2019; Accepted: 06-09-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 12-14

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास विरचित रामचरितमानस में अरण्यकांड का अध्ययन

कुमार० सुविद्य विनायक धारवाडकर
Department of Hindi, Parvatibai Chowgule College of Arts and Science, Goa, India

सारांश
हिन्दी साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य को सही तरीके से विश्लेषित करने हेतु उसे तीन कालखण्डों में विभाजित किया हैं। वह तीन कालखंड आदिकाल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल कहलाते हैं। अगर हम संक्षिप्त में प्रत्येक काल-खंड का वर्णन करें तो-

- आदिकाल में हिन्दी साहित्य का अभिर्भाव काल, प्राकृतभास हिन्दी के सबसे पुराने पद्य, आदिकाल की पूर्णावधि, लोकवृत्ति, साहित्यिक सामाग्री अपभ्रंश परंपरा आदि देखने मिलती है।
- मध्यकाल दो भागों में विभक्त हैं- भक्तिकाल अपने काल-खंड की राजनीतिक और धार्मिक परिस्थिति,भक्ति प्रवाह, सगुण भक्ति परंपरा, निर्गुण भक्ति परंपरा आदि का साक्षी हैं।
- रीतिकाल रीति परम्पराओं के आरंभ का साक्षी हैं तो
- आधुनिक काल गद्य-निबंध साहित्य,भारतेन्दु युग का प्रत्यक्षदर्शी हैं।

विषयवस्तु सगुणधारा रामभक्ति काव्य धारा पर होने के कारणवश उसी कालखंड पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक हैं। भक्ति से उत्पन्न साहित्य संसार का सर्वश्रेष्ठ साहित्य माना गया है। उनकी भक्ति ने संसार के समक्ष यथोचित उदाहरण प्रस्तुत किया है।भक्ति काव्य का हिन्दी साहित्य में अपना विशेष स्थान हैं क्योंकि इसी युग के रससिद्ध कवियों ने भाव के क्षेत्र में अल्लादकारिणी भाव धारा को बहाया तथा सुप्त जनता को जागृत करने का प्रयास किया जिसका अध्ययन करना आवश्यक हैं।रामभक्ति शाखा में महाकवि तुलसीदास का स्थान शिरोमणि हैं।

मूल शब्द: तुलसीदास, विषयवस्तु, कारणवश

प्रस्तावना
हिन्दी साहित्य अपने आप में ही एक प्राचीनतम एवं गौरवयुक्त साहित्य हैं। अगर हम हिन्दी साहित्य के इतिहास पर ध्यान दें तो हमें यह आभास हो जाता हैं कि महान साहित्यकारों, हिन्दी समीक्षकों तथा पुरातत्ववेत्ताओं ने हिन्दी इतिहास का अध्ययन करने हेतु उसे प्रधान रूप से 3 कालखण्डों में विभाजित किया गया हैं जिसे सामान्य तौर पर आदिकाल जिसे हिन्दी प्रख्यात हिन्दी विद्वान तथा समीक्षक 'वीरगाथा काल' इस नाम से भी संबोधित करते हैं।

आगे मध्यकाल दो भागों में विभक्त हैं-भक्तिकाल तथा रीतिकाल और तृतीय चरण आधुनिक काल इस नाम से जाना जाता हैं। इन निर्धारित कालखण्डों के माध्यम से हिन्दी भाषा की विकासनशीलता और प्रत्येक खंड में किस प्रकार का साहित्य लिखा जाता था यह ज्ञान होता हैं तथा अध्येता को उस कालखंड में रचित साहित्य तथा उक्त कालखंड के अंतर्गत विद्यमान स्थितियों, समाजवादों पर तुलनात्मक अध्ययन करने में सरलता होती हैं।

विषय वस्तु
भक्ति कालखंड की राजनैतिक तथा धार्मिक परिस्थिति, भक्ति प्रवाह सगुण भक्ति काव्यधारा तथा निर्गुण भक्ति काव्य धारा का प्रत्यक्ष साक्षी हैं। भक्तिकाल अपने आप में ही एक उज्ज्वलतम काल हैं।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि इस स्वर्ण काल के महान तीर्थस्वरूप संत कवियों ने भक्ति धारा को प्रवाहित कर ऐसे साहित्य का सर्जन किया जिसकी तुलना आज के साहित्य के साथ करना असंभव हैं।इस काल का अध्ययन करना आवश्यक हैं क्योंकि इस काल में विद्यमान विश्व प्रख्यात संत कवियों की श्रेणी में मूर्धन्य स्थान रखने वाले संत कबीरदास (निर्गुण भक्ति काव्यधारा), गोस्वामी तुलसीदास (सगुण राम भक्ति काव्यधारा) आदि कवियों की गाथा गाता हैं साथ ही साथ हमें दक्षिण भारत से सृष्टित ऐतिहासिक भक्ति आंदोलन पर ध्यान केन्द्रित करने हेतु विवश करता हैं।

भक्तिकाल के सभी संत कवियों ने भक्ति की पराकाष्ठा को लाँग कर एक उज्ज्वलतम इतिहास की सृष्टि की। उनकी निःस्वार्थ भक्ति से उत्पन्न साहित्य समग्र विश्व का उत्कृष्ट साहित्य माना गया हैं। भक्तिकाल के अंतर्गत सगुण धारा के कवियों ने जीवन की सारी मोह-माया का परित्याग कर परमेश्वर के सगुण रूप से अंथांग प्रेम किया और फलस्वरूप भक्तिरस से उत्पन्न साहित्य का जन्म हुआ।

रामभक्तिशाखा के अंतर्गत महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान शिरोमणि हैं। वे श्रीराम रूपी भक्ति-क्षीर प्राशन कर स्वयं राममय हो चुके थे। उन्होंने आजीवन श्रीराम को ही अपना सर्वस्व बनाया। उनकी श्री राम के प्रति निःस्वार्थ भक्ति आज भी उनका साहित्य हमारे हृदयासन पर विराजमान हैं और सदैव विराजमान रहेगा यह कामना।

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी की जीवनी पर ध्यान दें तो उनका जन्म संवत् 1554 को माना जाता हैं। बाबा बेनीमाधवदास के अनुसार तुलसीदास जी का जन्म श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को हुआ था। इस वाक्य को प्रमाणित करने हेतु महान हिन्दी साहित्यकार परम आदरणीय आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन हैं –"दोनों चरितों में गोस्वामी जी का जन्म 1554 माना गया हैं। बाबा बेनी माधवदास की पुस्तक में तो श्रावण मास शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथि दी गई हैं" (हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल,2007)

संदर्भ मिलते हैं कि गोस्वामी जी के पिता का नाम श्रीमान०आत्माराम दुबे और मातश्री का नाम हुलसी था। कहा जाता हैं कि गोस्वामी जी मूल नक्षत्र पर पैदा हुए थे (भारतीय संस्कृति के अनुसार अभद्र नक्षत्र माना जाता हैं)अतः उनके माता पिता ने गोस्वामी जी का परित्याग किया।

संदर्भ मिलते हैं कि जब गोस्वामी जी पैदा हुए थे तब वे 5 वर्ष के समान थे और उनके पूरे दाँत थे जो कि एक आश्चर्यजनक तथ्य हैं। द्वितीय आश्चर्यजनक तथ्य यह हैं कि जन्म होते ही शिशु तुलसीदास जी रोये नहीं वरन राम-राम यह पवित्र शब्द

उनके मुख से निरंतर आता रहा।
इन आश्चर्यजनक एवं असामान्य गतिविधियों को देखकर पिता जी (आत्माराम दूबे) को देखकर पिता जी उन्हें दैत्य समझ बैठे और उनकी निरंतर उपेक्षा करते रहे। अंततोगत्वा,माता हुलसी ने अपने पुत्र तुलसीदास को दासी चुनिया को सौंप दिया जिन्होंने तुलसी का पालन-पोषण किया।

राम भक्त तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास जी का बाल्यकाल अत्यंत कष्टमय था। बाबा नरहरिदास ने गोस्वामी तुलसीदास जी को अपनी शरण में लिया तथा शिक्षा-दीक्षा देकर वेद-शास्त्र में पारंगत किया। 15 वर्ष तक अध्ययन करके वे अपनी जन्मभूमि राजापुर पहुँचे। उनकी वैवाहिक जीवन पर ध्यान देना अनिवार्य है क्योंकि वैवाहिक जीवन ही उनके राम भक्ति में लीन होने वाला सेतु है।
महान साहित्यकार परम आदरणीय डॉ॰ बच्चन सिंह अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' में कहते हैं कि उनका विवाह 1583 को भारद्वाज गोत्री रत्नावली को ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी गुरुवासर को हुआ था।
आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मत हैं-"यमुना पार के एक ग्राम के रहने वाले भारद्वाज गोत्री एक ब्राह्मण यम द्वितीया को राजापुर में स्नान करने आये। उन्होंने तुलसीदास जी कि विद्या,विनय और शील पर मुग्ध होकर अपनी कन्या इन्हें ब्याह की" (आचार्य रामचंद्र शुक्ल,हिन्दी साहित्य का इतिहास,पृ॰106)
गोस्वामी तुलसीदास का संत गोस्वामी तुलसीदास में परिवर्तन-
माता रत्नावली के उपदेश पर ही उनकी भक्ति में लीन होने वाला संदर्भ आश्रित हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन हैं-"तुलसीदास जी अपनी इस पत्नी पर इतने अनुरक्त थे कि एक बार उसके मायके चले जाने पर वे बड़ी नदी पार कर उससे जाकर मिलें" (हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,पृ॰106)
यहीं क्षण तुलसी के जीवन को एक नई दिशा देने में सहाय्यभूत बना। रत्नावली गोस्वामी तुलसीदास जी को कहती हैं-
"लाज न लागत आपको दौरे आयाहु साथ। धिक-धिक ऐसे प्रेम को कहा कहों मैं नाथ। अस्थि-चर्ममय देह मम तामे जैसे प्रीत। तैसो जौ श्रीराम मह होति न तौ भावभीत" (हिन्दी साहित्य का इतिहास,रामचन्द्र शुक्ल,2007,पृ॰106)
गोस्वामी जी तथा माता रत्नावली के बीच बातें कुछ इस प्रकार होती हैं-नाथ! आपको लज्जा नहीं आती जो आप यहाँ तक दौड़े चले आए हैं? ऐसे स्नेह ऐसे प्रेम पर नाथ दिक्कर हैं। आप मेरे आस्थि तथा चर्मयुक्त देह पर ही प्रेम करते हैं। अगर इस प्रकार का प्रेम आप श्रीराम जी पर करते तो आपका बेड़ा पार हो जाए।
इस किंचित संवाद से तुलसीदास जी बहुत प्रभावित हुए कि उन्होंने काशी आकर वैराग्य स्वीकार किया। गृहस्थाश्रमयुक्त गोस्वामी जी ने संन्यासाश्रम में प्रवेश किया।आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं –"इस वृत्तांत को प्रियादास जी ने भक्तिकाल की अपनी टीका में दिया हैं और तुलसी चरित और गोसाई चरित में इसका उल्लेख हैं"(आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास,पृ॰106)और वह स्वर्ण वेला आई जब रत्न शिरोमणि कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने अयोध्या राज्य में सन 1631 में प्रसिद्ध महाकाव्य रामचरितमानस की रचना का शुभारंभ किया।
महान साहित्यकार रत्नाकर पांडेय का कथन हैं-"शिव जी के आशीर्वाद से तुलसीदास जी के हृदय में काव्य का सूर्य जाग उठा। वे रामचरित को काव्य सूत्र में गूँथने लगे।संवत 1631में रामनवमी भौमवासर को अवधपुरी में रामचरितमानस की रचना प्रारम्भ हो चुकी थी। संवत 1633 के मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में रामचरितमानस को तुलसीदास ने परिपूर्ण रच दिया। इस प्रकार 2 वर्ष,7 महीने तथा 26 दिनों में रामचरितमानस जैसे लोकमंगलकारी को पूर्ण रूप से लिखकर समाप्त कर दिया" (रत्नाकर पाण्डेय, अँधेरे का सूर्य-तुलसीदास,2008)
डॉ॰ बच्चन सिंह का कथन हैं-"मानस में आदर्श की पूर्ण रक्षा हैं। आदर्श गुरु आदर्श माता-पिता,भाई ,पत्नी,पुत्र,राजा एवं प्रजा आदर्श समाज का समग्र चित्रण मिलता हैं"।
विश्व प्रख्यात साहित्यकार जय किशन प्रसाद खंडेवाल जी का मत हैं –"तुलसी की स्पष्ट घोषणा हैं कि वह सहृदय है जो रामचरित का पान करने को निरंतर लालायित हैं"। इस वाक्य से ही रामचरितमानस की महत्ता ज्ञात होती हैं" (हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, जयकिशनप्रसाद खंडेवाल,1949)

गोस्वामी तुलसीदास विरचित रामचरितमानस का प्रारूप

रामचरितमानस में महाकवि तुलसीदास जी ने अवधी भाषा का प्रयोग किया हैं। रामचरितमानस का मुख्य स्त्रोत वाल्मिकी विरचित रामायण महाकाव्य दृष्टव्य हैं। इस वाक्य को सिद्ध करते हुए डॉ॰ बच्चन सिंह का कथन-"रामकथा का मूल स्त्रोत संस्कृत में रचित वाल्मीकि रामायण हैं। (हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,बच्चन सिंह)
उल्लेखित हैं कि मानस महाकवि तुलसीदास के राम-भक्ति तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के लीलाओं का दुग्ध-शर्करा युक्त मधुर क्षीर के समान हैं जिसे बालकांड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकांड, किष्किन्धाकांड, सुंदरकांड, लंकाकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड में विभाजित किया हैं।

अरण्यकाण्ड

प्रस्तावना

कलियुग में जनमानस के पापों का क्षय करने वाले रामचरितमानस में अरण्यकाण्ड एक महत्त्वपूर्ण भाग हैं।उक्त वचन से ही पता चलता हैं कि यह अध्याय मर्यादापुरुषोत्तम प्रभु श्री रामचन्द्र के वनवास संदर्भ पर आधारित हैं। अरण्यकांड रामचरितमानस का तृतीय सोपान हैं।

विषय वस्तु

अरण्यकांड का प्रारूप

अरण्यकांड के प्रारम्भ में पुरंदर पुत्र जयंत की कुटिल नीतियों से होता हैं। मूरख जयंत श्रीराम की शक्ति का परीक्षण करने हेतु काक का रूप धारण कर माँ सीता के चरण पर अपनी चोंच के माध्यम से प्रहार करता हैं। माँ सीता के चरणकमल से रक्त का प्रवाह देखते ही प्रभु श्रीराम ने बाण साध लिया। भय से युक्त जयंत देवेंद्र की शरण में चला गया। वास्तविकता से अवगत होने के पर (श्री राम के साथ छल) देवेंद्र को अपनी शरण से निष्कासित करता हैं।
राम तथा महर्षि अत्रि का प्रसंग द्रष्टव्य हैं। राम सहित सीता चित्रकूट से ऋषि अत्रि-अनुसूया के आश्रम पहुँचते हैं।वहाँ से श्री राम ने प्रस्थान कर शरभंग ऋषि से भेंट की। शरभंग ऋषि को श्री रामदर्शन की अभिलाषा थी और अभिलाषापूर्ति के बाद सभी मोह-माया से विमुक्त शरभंग ऋषि ने अपनी योगाग्नि से स्वयं को भस्मीभूत किया। निः संदेह यह प्रसंग जनमानस के समक्ष निःस्वार्थ रामभक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करता हैं।
पंचवटी में रावण की बहन शूर्पणखा ने आकर राम से प्रणय निवेदन किया।परंतु लक्ष्मण ने उसके प्रणाय निवेदन को अस्वीकार कर दिया और इसके चलते शत्रु की बहन होने के कारण लक्ष्मण ने राक्षसी प्रवृत्ति रावणानुजा शूर्पणखा की नाख तथा कर्ण काट दिए।
क्रोधग्नि तथा परास्त भावना में जलती शूर्पणखा ने खर-दूषण नामक दैत्य की सहाय्यता ली। खर-दूषण की राक्षसी सेना का संहार राम ने सहजरूप से किया।अपनी भगिनी का अपमान रावण सह न सखा। अतः वह मोह माया में पारंगत दैत्य मारीच को राम से युद्ध करने हेतु भेजता हैं।
मायाजाल की विद्या से युक्त इस दैत्य ने स्वर्णमृग का रूप धारण कर सीता का मन विचलित करने का प्रयास किया। माया से ग्रसित विचलित माँ सीता ने राम से स्वर्णमृग के खाल (चर्म) की माँग की। अतः उस स्वर्णमृग की ख़ोज में राम चल पड़े। उसी दौरान छल-कपट से साधु का रूप धारण कर रावण ने माँ सीता का अपहरण किया।
जब रावण ने सीता को पुष्पकयान से लंका ले जाने लगा तब सीता का आक्रोश सुनकर रामभक्त खगराज जटायु वहाँ आ गया। रावण और जटायु के भीषण युद्ध में जटायु आपने प्राण त्यागता है। जटायु इस विचार से भली भाँति अवगत थे कि वे दशानन से युद्ध करने में असक्षम हैं फ़िर भी जानकी के प्रति आदरभाव तथा पुत्रकर्तव्य को निभाने हेतु उन्होंने रावण से युद्ध किया।

राम को सीता अपहरण इस कटु वास्तविकता से अवगत कराते हुए रक्तरंजित जटायु ने अपने प्राण त्याग दिए। जटायु का देह-संस्कार कर राम माँ सीता की खोज में लक्ष्मण सहित लंका की ओर बडने लगे। इसीसे अरण्यकांड की समाप्ति होती हैं।

निष्कर्ष

अरण्यकांड में महाकवि तुलसीदास जी ने अवधी भाषा द्वारा पाठक के सामने मानो अपना महाकाव्य दृश्य में रूपान्तरण किया है। निःसंदेह अरण्यकाण्ड का अध्ययन करते हुए अरण्य में घटित प्रसंग जैसे पुरंदर पुत्र जयंत की कुटिलता,सीता अनुसूया मिलन,सुतीक्ष्ण जी का प्रेम,पंचवटी में निवास,मायावी खरदूषण का वद,मारीच प्रसंग,सीताहरण तथा राम का माँ सीता की ख़ोज में राम का प्रयाण और शरबीर पर कृपा।

उपसंहार

भक्तिकाल में भक्त संत कवियों ने परमेश्वर की भक्ति करते हुए एक उत्कृष्टतम साहित्य का सर्जन किया जो निःसंदेह कालजयी हैं।प्रकल्प में उल्लेखित हैं कि भक्तिकाल स्वर्णयुग के समान हैं।

भक्तिकाल तथा कालखंड में रचित साहित्य की व्याख्या करते हुए प्रख्यात साहित्यकार जय किशनप्रसाद खंडेवाल कहते हैं-"भक्तिकाव्य की आत्मा भक्ति हैं और उसका जीवन स्रोत रस हैं। यह हृदय,मन और आत्मा की भूख एक साथ तृप्त करता है अतः इसे स्वर्णयुगीन साहित्य कहा जाता है"(हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ,हिन्दी साहित्य और भक्तिकाल,जय किशनप्रसाद खंडेवाल,पृ॰129)

प्रकल्प में उल्लेखित हैं कि रामचरितमानस में महाकवि तुलसीदास जी ने श्री राम के आदर्शवादी चरित्र का वर्णन किया हैं। रामचरितमानस को ग्रंथरत्न इसलिए कहा गया हैं क्योंकि इसमें तुलसीदास जी ने आदर्श पिता,आदर्श राजा के गुण ,रामराज्य की परिकल्पना जहां हर कोई व्यक्ति सुख-समृद्धि से युक्त हो,द्वेष-भाव विच्छेदन आदि तत्वों को राम जैसे आदर्श पुरुष को केन्द्र स्थान पर रखकर समाज को अच्छे गुण देने का सुप्रयास किया हैं जिसमें वे निःसंदेह सफल बने अतः उनका साहित्य कालजयी हैं।

तुलसी भक्तिरस की अगाध निधि है। भाव,भाषा और शैली के प्रयोग में जो विविधता तुलसीदास में पाई जाती है वैसे पाना अत्यंत दुर्लभ है। अपनी गरिमा के कारण तुलसी का काव्य आज जनमानस का कंठ हार बन चुका हैं।

डॉ॰ रमा सूद के रत्न वचनों द्वारा कहा जाए "तुलसी की काव्यसरिता में मैंने जितना ही अवगाहन किया उतना ही अधिक मुझे आत्म-तुष्टि और जीवन अनुभूतियों से साक्षात्कार हुआ"। इस कथन से ही तुलसीदासवाणी की दिव्यता का अनुभव होता हैं।तुलसीदास की भक्ति सूर्य की बाल रश्मियों के समान मासूम हैं। उन्होंने कभी भी श्री राम की भक्ति किसी भी प्रकार की सिद्धि प्राप्ति हेतु नहीं की। राम को पाना ही उनके जीवन का मुख्य उद्देश था। मधुसूदन के रत्नवचनों से कहा जाए-

आनन्दकानने कश्चिद तुलसी जंगमस्तरुः।
कविता मंजिरी यस्य रामभ्रमरभूषिता॥
-(मधुसूदन सरस्वती, हिन्दी साहित्य का इतिहास,पृ॰ 107)

अन्वय -मधुसूदन सरस्वती जी कहती हैं कि काशी रूपी आनन्द कानन में गोस्वामी तुलसीदास जी चलता फिरता पवित्र तुलसी अर्थात जंगम का पौधा हैं। उनकी काव्यमंजिरी बड़ी सुंदर हैं जिसपर राम रूपी भ्रमर सदैव मंडराया करता हैं।

संदर्भ सूची

1. र॰सी प्रसाद, (1988), गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस, मोतीलाल प्रकाशन, दिल्ली
2. डॉ॰ योगेन्द्र प्रताप सिंह,(2002),चतुर्थ संस्करण,श्रीरामचरितमानस द्वितीय सोपान अयोध्याकाण्ड लोकभारती प्रकाशन
3. डॉ॰ योगेन्द्र प्रताप सिंह,(2001),द्वितीय संशोधित संस्करण,श्रीरामचरितमानस सप्तम सोपान उत्तरकाण्ड,लोकभारती प्रकाशन
4. प्रेम प्रकाश बंसल ,(2007), प्रथम संस्करण,रामचरितमानस में राम और काम .
5. डॉ॰ विनय प्रकाश गौड़,(2009),गोस्वामी तुलसीदास का जीवन वृत्त,अनुभव प्रकाशन,दिल्ली
6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल,(2007),प्रथम संस्करण, हिन्दी साहित्य का इतिहास,कांति प्रकाशन। (प्रकरण ४)
7. डॉ॰ (श्रीमती) रमा सूद,(1998),महाकवि तुलसीदास : एक अध्ययन,यूनिवर्सिटी पब्लीकेशन,नई दिल्ली।
8. विद्यानिवास मिश्र,(2002),प्रथम संस्करण, तुलसीदास-भक्ति प्रबंध का नया उत्कर्ष ।
9. रत्नाकर पाण्डेय,(2008),प्रथम संस्करण,अंधेरे का सूर्य-तुलसीदास,स्वराज प्रकाशन,दिल्ली
10. आचार्य रामचंद्र शुक्ल,(2007),हिन्दी साहित्य का इतिहास,मलिक एंड कंपनी जयपुर दिल्ली।
11. श्रीमद्गोस्वामी गोस्वामी तुलसीदास, 2070 पुनर्मुद्रण, श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस-गोरखपुर।
12. डॉ॰ भागीरथ मिश्र ,(1981), दशम संस्करण, तुलसी रसायन, साहित्य भवन इलाहाबाद 3।
13. जय किशन प्रसाद खंडेवाल, (1949) नवीनतम संस्करण (प्रथम संस्करण) , हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन आगरा।